बीसवी सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में परिलक्षित धार्मिक परिवेश का चित्रण

डॉ . ज्ञानेश्वर भाऊसाहेब जाधव
हिंदी विभाग
शिवनेरी महाविद्यालय शिरुर अनंतपाळ

भारतीय सामाजिक चेतना धर्मप्रधान रही है। धर्म मनुष्यों को जोडने की शक्ति रखता है। इस कारण धर्म जनमानस में गहराई से उतरा है। भारतीय परंपरा में धर्म को व्यापक एवं विस्तृत रूप में ग्रहण किया गया। प्रमुख भारतीय सामाजिक चिन्तकों ने धर्म के आधार पर अपनी विचारसरणी प्रस्तुत की है। यह धर्म सहिष्णूता, सद्‌गुण, सर्जनात्मक वृत्तियों, समर्पित कृतियों आदि पर आधारित है। बीसवी सदी के उत्तरार्द्ध में विनोबा भावे ने धर्म के उस अंश को अस्वीकार करने का विचार दिया है, जो मनुष्य जाति को संगठित करने की अपेक्षा विघटित करने की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। धर्म के आध्यात्मिक अंश को जो मनुष्यमात्र की एकता को स्थापित करता है, उसे स्वीकार करने का आग्रह है। विनोबा भावे ने अध्यात्म को विश्व-समाज के लिए उपादेय और उत्कृष्ट विषय के रूप में निश्चित किया है।

मानव जीवन के इतिहास में धर्म की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। धर्म विश्व की सभ्य, अर्धसभ्य तथा असभ्य जातियों में किसी न किसी रूप में प्रचलित रहा है। प्रायः धर्म का जन्म भूत-प्रेत, पूजा आदि से हुआ अथवा प्राकृतिक शक्तियों को सजीव शक्तिशालविषय रहा है। धर्म का जन्म सामान्य रीति-रिवाजों को रूढ़ बनाने से हुआ। प्रायः अधिकांश विद्वान इस बात से सहमत है कि, धर्म एक सार्वभौमिक परिकल्पना है और इसका इतिहास सभ्य मानव के इतिहास जितना ही पुराना है। धर्म और समाज का घनिष्ठ संबंध रहा है। धर्म किसी भी मनुष्य में जन्मजात नहीं होता। मानव जिस अवस्था में अपने को प्राकृतिक शक्तियों के अधीन पाता है, उस अवस्था में धर्म का सहारा लेना उसके लिए स्वभाविक हो जाता है। धर्म के साथ ही भाग्यवाद, पुनर्जन्म, ब्राह्मणवाद और मोक्ष - जैसी धारणाएँ जुड़ी रहती है।

धर्म की परिभाषाएँ :

एंगेल्स के अनुसार - "हर प्रज ार धर्म म-ुष्यों जे मस्तिष्कों में उन बाह्य शक्तियों के काल्पनिक प्रतिबिंब के सिवा और कुछ नहीं होता, जो उनके दैनिक जीवन को नियंत्रित करती है। यह ऐसा प्रतिबिंब है जिसमें लौकिक शक्तियाँ अलौकिक शक्तियों का रूप धारण कर लेती है। इसका अर्थ हुआ कि - उन बाहरी प्राकृतिक तथा सामाजिज शक्तियों के साथ जो उनके ऊपर शासन करती है, मनुष्य जे तात्कालिक अर्थात् भावनात्मक संबंध के रूप में धर्म तब तक बराबर बना रहता है, जब तक कि मनुष्य इन शक्तियों के नियंत्रण में बँधे हैं।" धर्म भौतिक जीवन में सबसे अधिक दूर होता है और लगता है कि भौतिक जीवन से उसका रत्ती भर भी सम्ब-ध -हीं है" [1] डॉ. अम्बेडकर के अनुसार - "धर्म प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। धर्म की उपेक्षा करना सजीव संवेदनाओं की उपेक्षा करना है। उनके अनुसार धर्म एक व्यवस्था तथा शक्ति है। धर्म का साम्राज्य भले ही खत्म हो गया हो, परंतु आज भी सामाजिक चेतना के रूप में लोगों के मस्तिष्क में मौजूद है।" [2]

भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण के युग में जीवनयापन कर रहे वर्तमानकालीन लोगों के धार्मिक दृष्टिकोन में परिवर्तन आने लगा है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण उनमें धर्म के प्रति आस्था कम होने लगी है। पुजारी-पुरोहितों द्वारा पूर्वनिर्धारित आदर्श मूल्य आज अस्वीकृत होने लगे हैं। वैज्ञानिक उन्नति के कारण ग्रामीण समाज में धार्मिक विश्वासों पर प्रश्नचिह्न लगाए जा रहे है। समसामयिज ग्रामीज युवज ों में धर्म के प्रति अनास्था की भावना बढ़ने लगी। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण

ग्रामीण युवा वर्ग धर्म के प्रति आक्रोश एवं अनादर की भावना व्यक्त करते हैं। राजनीति से प्रेरित लोग समाज में धार्मिक भेदभाव फैलाकर सत्ता प्राप्त करने पूरा करते हैं। इस बदलते धार्मिक परिवेश का यथार्थ वर्णन बीसवी सदी के अंतिम दशक में लिखे गए उपन्यासों में किया गया है। इन उपन्यासकारों ने भारतीय समाज में विघटित धार्मिक मूल्यों को प्रस्तुत करने के साथ-साथ बचे हुए धार्मिक मूल्यों को भी अपने उपन्यासों में दर्शाया है।

बीसवी सदी के अंतिम दशक में लिखित हिंदी उपन्यासों में धार्मिक मूल्यों के चित्रण के साथ साथ धर्म पर प्रभाव डालने वाली जो घटनाएँ घटित हुई हैं उसका यथार्थ वर्णन किया गया है। जिसको हम निम्न रूप से देख सकते है।

1 बाबरी - मस्जिद विध्वंस :

6 दिसम्बर, 1992 में अयोध्या में स्थित रामज-मभूमि - बाबरी मस्जिद का विध्वंस किया गया। इसके परिणामस्वरूप देश में जो सांप्रदायिक माहौल बिगड़ गया था, इसका वर्णन अंतिम दशक में लिखित भगवानदास मोरवाल के 'कालापहाड़' और ज्योतिष जोशीकृत - 'सो-नबरसा' उपन्यास में किया गया है। 'कालापहाड' उपन्यास में यह बताया गया है कि मेवात के लिए इससे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटना हो ही नहीं सकती। इस घटना ने दो समुदायों के बीच फाँक और एज -दूसरे के प्रति संशय और संदेह के बीज बो दिए। 6 दिसम्बर की इस दुःखद घटना के बाद प्रतिक्रियास्वरूप मेवात में शुरू में जो छुटपुट शरारतें हुईं वे प्रशासन और यहाँ के स्थानीय राजनीतिज्ञों द्वारा प्रायोजित थीं। प्रशासन और पुलिस की भूमिका तो पूरी तरह एक तरफा थी, जिसका शिकार उपन्यास का प्रमुख पात्र सलेमी तथा उस-जैसे अनेक निर्दोष आम लोगों को होना पड़ा।

बाबरी मस्जिद विध्वंस की घटना और उनके बाद परिणामस्वरूप घटित तमाम गतिविधियों ज ा यथार्थ वर्ज-न ज्योतिष जोशीकृत - 'सोनबरसा' नामक उपन्यास में किया गया है, जिसका निम्न उदाहरण दर्शनीय है - "मर-ने - मार-ने पर उतारू भीड़ ने बड़ी योजना के साथ बाबरी मस्जिद का विध्वंस कर दिया और उसके परिसर में रामलल्ला की अस्थाई मूर्ति स्थापित कर दी। पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के आंशिक प्रतिरोध के बावजूद अयोध्या में पैशाचिक तांडव का दृश्य दिन भर चला। कुछ लोग इस कार्य में पुलिस जे गोलियों से छलनी हुए तो महिमामंडित कर शहीद और जेहादी वीर की संज्ञा दे दी गई। लोगों ने मस्जिद विध्वंस को दुर्भाग्यपूर्ण तो कहा पर नैतिक रूप से इसका दायित्व एक-दूसरे पर सौंपकर देश के साम्प्रदायिक सद्भाव को एक बार फिर बिगड़ जाने दिया। अलग-अलग धर्मो ओर पंथो की ओर से इस कृत्य की भर्त्सना हुई और पूरा देश बुरी तरह का अपना मकसद ाी मानने से यह विवाद कासे तनाव के घेरे में आ गया। राजनेताओं और पांथिक आकांक्षाओं की ओर से लगातार परस्पर विरोधी बातें होने लगी, जिससे लगने लगा कि कहीं यह उन्माद आगे बढ़कर समूचे देश को अपनी गिरफ्त में ले लेगा। पर यह इस देश के किस्मत से संभव न हुआ, पर जो साम्प्रदायिक आग दहकी उसका परिणाम अच्छा न हुआ। देश में जगह-जगह इसके विरुद्ध प्रदर्शन हुए और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत की बड़ी फजीहत हुई।"[3]

2 धार्मिक एकता एवं सद्भाव :

अंतिम दशक में मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित आंचलिक उपन्यास 'इदन्नमम्' में सैदानगर में परिलक्षित विभिन्न धर्म के ग्रामीण लोगों में उपस्थित धार्मिक एकता एवं सद्भाव का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस संदर्भ में निम्न पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं -

"बस सैदानगर पर आकर रुक गई। उतरकर चल पड़े सब लोग। मंदाजि-नी -ने देजा, मंदिर ही मंदिर दिखाई पड़ रहे हैं यहाँ। बीच-बीच में मस्जिदें भी।

मोदी लल्ला बोले, "बिटिया, तुम तो रामायण बाँचती हो, लो पहचानो, मंदिर-मस्जिद। कहाँ से भजनों की धून आ रही है और कहाँ से तिसरे पहर की नमाज की अजान।"

"हओ लल्ला।" मंदाकिनी ध्यान देकर सुनने लगी भक्ति ध्वनियों को। लाल रंग से पुते मंदिर के आगे बने चबुतरे पर एक वृक्ष के नीचे बसेरा लिया। वहीं साथ लायी चादर बिछाकर बैठ गए सब लोग।

बाद में चीफ काका नमाज पढ़ने चले गए।

मोदी लल्ला, उबल बब्बा और मिठ्ठू कक्का को बतला रहे हैं - "देज रहो हो यह मंदिर-मस्जिदें। लो, आज

तक हिंदू - मुसलमानों का कभी दंगा नहीं हुआ यहाँ। आपसी बैरभाव भी नहीं देखा किसी ने। चीफ तो हर साल आते हैं ईद के बखत। भेदभाव का टंटा ही नहीं।" [4]

3 धार्मिक आस्था :

भारतीय जन-जीवन पर धर्म का गहरा प्रभाव होता है। ग्रामीण लोगों का पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन एवं आर्थिक जीवन सभी धार्मिक भावना से परिचलित होता है। धर्म से ही ग्रामीण लोग घोर आपदाओं एवं संकट होती है, जिसके कारण जीवन की अनिश्चितताएँ, उत्कठाएँ एवं बाधाएँ उन्हें परेशान नहीं करती। गाँव के लोग रामायण, महाभारत, पार्वती मंगल आदि का परायण कर घोर आपदाओं एवं संकट के बीच नैतिक बल प्राप्त करते हैं। इस संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पाकृत 'इदन्नमम्' उपन्यास की निम्-ा पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं - "गनपत कक्का से कह रही थी न तुम ? यह नहीं कि मन शांत रखे। चलो चटाई पर बैठो। हम रामायण लेकर आ रहे हैं। ज्ञा-ा-ध्यान की बातें सुनो।"

ज़ुसुमा भाभी -हा-धोज़र पास आ बैठी।

मन्दाकिनी रामायण पढ़ने बैठ गई। बऊ अपना चश्मा लगाकर गौर से देखते हुए बोली, "बेटा, राम-व-ा-गमन की चौपाई बाँच दो।

राम-व-ा-गमन।

ह ओ मोरी पुतरिया!! बऊ हाथ जोड़े बैठी थी।" [5]

रामायण पाठ का वर्णन मिथिलेश्वरकृत 'युद्धस्थल' उपन्यास में भी किया गया है। जिसकी निम्न पंक्तियाँ दर्श-ीय हैं - "पिछले दो दिनों से इस भरतपुर गाँव में श्रीमान नारायणजी आए हैं। वे एक हफ्ता ठहरेंगे। राम-ज़था ज़े वे अच्छे जानकार हैं। प्रति शाम बरगद के नीचे उनका रामायण पाठ होता है। रामायण की चौपाइयों का अर्थ वे कहीं बहुत ज़हरे में उतरकर अत्यंत सहज और सरल शब्दों में बताते हैं ज़ि लोज़ राम-कथा के प्रवाह में डूब जाते हैं। हटने का नाम नहीं लेते। लगातार तीन-चार घंटे तक उनका पाठ चलता रहता है।" [6]

4 देवी-देवताओं की पूजा :

ज़ामीज़ लोज़ विभिन्न देवी-देवताओं में आस्था रखते हैं। ग्रामीण जन देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। स्थानीय देवी-देवता और घाट के देवी-देवता इनके लिए पूजनीय होते हैं। वे दु:ख में इन्हीं की शरण में पहुँचते हैं और विशिष्ट अवसरों पर उनकी पूजा करते हैं। भारत में देवी-देवताओं की आराधना ग्रामीण लोग बड़ी श्रद्धा- भक्ति से करते हैं। अंतिम दशक के अनेक ग्रामीण उपन्यास 'युद्धस्थल', भीमअकेला, सोनबरसा, झूला नट, चार दिन आदि में उपर्युक्त विषयों का सजीव वर्णन मिलता है। उपन्यासों के निम्न उदाहरण द्रष्टव्य है -

"सती-चौरा के एक कोने में सती मैया की छोटी-सी मूर्ति की स्थापना की गई है। लेकिन वह मूर्ति अब नजर नहीं आती। सिंदूर के ढेर के नीचे दब गई है। गाँव की सधवा औरतें प्राय: हर के बीच नैतिक बल प्राप्त करते हैं। ईश्वर में उनकी अटूट अत्यौहार के अवसर पर सती मैया ज़ो सिंदूर चढ़ाने अवश्य आती है।" [7] ज्योतिष जोशीकृत 'सोनबरसा' उपन्यास में बालेश्वर चौधरी के दुर्गादेवी के भक्ति का वर्णन किया गया है।

5 अंधविश्वास :

भारत में ग्राम एवं नगरांचल दोनों में अंधविश्वास के दर्शन होते हैं। अंतिम दशक में लिखित उपन्यासों में व्रत-उपवास के नाम पर, देवी-देवताओं के नाम पर, बीमारियों के -ाम पर, शज़ु-ा-अपशकुन के बारे में, ग्रह-दशा ज़े बारे में, भूत-प्रेत चुड़ैल के बारे में, पत्थरा बब्बा के नाम पर, दुआओं के बारे में, ताबीजों के बारें में जो अंधविश्वास लोगों में है उसका यथार्थ वर्णन किया गए है। वीरेन्द्र जैन के 'डूब' उपन्यास में औरतों के लिए उपवास का कारण बताती हुई गोराबाई कहती है- "पार्वती ने शंकर भगवान को पाने के लिए तपस्या की थी न, तभी से कुँवारी कन्याएँ उमदा वर पाने को उपवास रखती आई हैं।" [8] उपन्यास में चंदेई में पथरा बब्बा के बारे में यह अंधविश्वास है कि पथरा बब्बा द्वारा नारियल की जगह आने-जाने वाले लोगों से उनके स्थान पर एक पथरा चढ़ा देने की चाह रखना, ऐसे करने पर दैवी आपत्ति का न आ जाना। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम्' उपन्यास में बऊ के माध्यम से ग्रामीजों ज़े शज़ु-ा-अपशकुन पर चर्चा की है। मंदा की ब्शुभ होगा।" [9] मैत्रेयी पुष्पा ज़े 'चाक' उपन्यास में भी ग्रामीण जीवन में फैले अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है। चन्दन के फौज में भरती होने पर सारंग उसकी नजर उतारती है, हाथ पर ताबीज बाँधती है। सारंग

की यह अंधविश्वासजन्य धारणा ग्रामीण जीवन की मानसिकता की निर्देशक लगती है। एक माँ का अपना बेटा फौज में सुरक्षित रहे, इसलिए ताबीज बाँधना अंधविश्वासजन्य मातृप्रेम का वाहक लगता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में सगुण-असगुण की चर्चा की गई है। शुभ कार्य के लिए कौन-से दि-न जि स दिशा में जाना चाहिए इसका भी वर्णन किया गया है। उपन्यास में खलील की शादी तय करने के लिए सोमवार को जाने वाले खलील के भाई जलील को दशरथ गौंड बताता है जि - "सुम्मार जाना ठीक नहीं होगा, मुड़की पुरब में है। सोम-सनीचर पूरब न चालू। मंगल-बुध उत्तर दिस कालू। जाना है तो अइतवार के दिन ही चले जाओ।" [10] यहाँ शुभ कार्य के लिए कब और किस दिशा को जाना है, इस पर आधारित अंधविश्वास ग्रामों में देखने को मिलते हैं।

अत: अंतिम दशके के हिंदी उपन्यासों में आलोच्यकालीन ग्रामीण समाज में परिलक्षित धार्मिक परिवेश का यथार्थ चित्रण किया गया है। लेखकों ने यह बतलाया है कि वर्तमान युवा पीढ़ी पर पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण पुरानों एवं अन्य धार्मिक ग्रंथों के प्रति उनकी आस्था कम हुई है। उनके धार्मिक मूल्यों में परिवर्तन आया है। आलोच्यकालीन उपन्यासकारों ने यह भी बतलाया है जि ग्रामीण जीवन में फैले अंधविश्वास को दूर करने के लिए शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार करना होगा।

संदर्भ :

1 . हंस (मासिक पत्रिका) अगस्त, 2002 - राजेंद्र यादव, पृ. सं. 45
2 . हंस (मासिक पत्रिका) अगस्त, 2002 - राजेंद्र यादव, पृ. सं. 44
3 . सो-नबरसा - ज्योतिष जोशी, पृ. सं. 40-41
4 . इदन्नमम् - मैत्रेयी पुष्पा, पृ. सं. 111-112
5 . इदन्नमम् - मैत्रेयी पुष्पा, पृ. सं. 73
6 . युद्धस्थल - मिथिलेश्वर, पृ. सं. 17
7 . युध्दस्थल - मिथिलेश्वर, पृ. सं. 128-129
8 . डूब - वीरेन्द्र जैन, पृ. सं. 118
9 . इदन्नमम् - मैत्रेयी पुष्पा, पृ. सं. 244
10 . मुखड़ा क्या देखे - अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ. सं. 83